साम्यवादी दानव का विस्तार

हिंसा जिनके आने का संकेत करती हो, राष्ट्रीय संस्कृति जिनके लिये बकवास हो, जीवन के श्रेष्ठ एवं आदर्श नैतिक मूल्यों का पर्याय "धर्म" जिनके लिये अफीम की तरह हो; ऐसे राष्ट्रघातक, समाज विरोधी एवं राष्ट्रद्रोही चरित्र के धनी साम्यवादी आज भारत जैसे धर्मप्राण देश में ये'न'केन प्रकारेण. अपना प्रभाव जमाने का प्रयास कर रहे हैं। अपने प्रभाव को जमाने के लिए साम्यवादियों का एक पुराना सिद्धान्त है कि "एक झूठ को सौ बार कह देने पर वह सच हो जाता है," आज इसी झूठ के सिद्धान्त को लेकर पूरे भारत में अपने वर्चस्व को स्थापित करने के लिए भारत के अन्दर साम्यवादी दानव उतावला दिखाई दे रहा है। वृहत्तर हिन्दू समाज की रूढ़िगत परम्पराओं तथा इस देश की विभाजनकारी राजनीति के कारण भी इस देश के अन्दर जाने-अनजाने में साम्यवादी विषाणु नक्सलवाद के रूप में तेजी के साथ अपना पैर फैला रहा है। देखते ही देखते पड़ोसी हिन्दू राष्ट्र नेपाल को साम्यवादी हिंसा निगल गई। किसी खर-पतवार की तरह इसकी रफ्तार का अन्दाजा भारत के अन्दर इसी से लगाया जा सकता है कि मई 2004 में भारत के 6 राज्यों के 56 जिलों तक सीमित नक्सलवाद आज मात्र चार वर्षों में 15 राज्यों के 300 से अधिक जनपदों में फैल चुका है। अर्थात् आधा भारत आज पूर्ण अथवा आंशिक रूप से नक्सलवादी हिंसा की चपेट में है। उत्तर प्रदेश के अन्दर पिछले चार वर्षों में तेजी के साथ नक्सलवादी उग्रवाद ने अपने पैर फैलाये हैं। चार वर्ष पूर्व प्रदेश में मात्र सोनभद्र जनपद में नक्सली गतिविधियाँ थीं। आज सोनभद्र. मिर्जापुर, चन्दौली, भदोही के साथ पूरा बुन्देलखण्ड और पूर्वी उत्तर प्रदेश के अन्दर देवरिया जनपद के 36 गाँव, कुशीनगर के 8 गाँव, महराजगंज के 6 गाँव, गोरखपुर के 2 गाँव नक्सलवादी गतिविधियों की दृष्टि से अत्यन्त संवेदनशील हो चुके हैं; वहीं तमाम अन्य जनपदों में यह सुगबुगाहट तेज होती दिखाई दे रही है। आज भी इस देश के राजनीतिक दलों द्वारा इन सबकी जैसी अनदेखी की जा रही

है वह किसी खतरनाक अनहोनी से कम नहीं। नक्सलवाद का जो फैलाव अभी इस क्षेत्र में कम अथवा अधिक मात्रा में दृष्टिगोचर हो रहा है; वह साम्यवादी अभियान के उसी हिस्से का अभिन्न अंग है, जिस त्रासदी का शिकार नेपाल हुआ है; जिसकी अन्तिम परिणति पशुपति से लेकर तिरुपति तक वृहद माओलैण्ड की स्थापना करना है। हमारा दृढ़ विश्वास है कि भारत की धर्मप्राण धरती नक्सलवाद अथवा साम्यवाद की धरती नहीं हो सकती। जहाँ धर्म होगा वहाँ साम्यवाद नहीं पनप सकता। लेकिन जहाँ धर्म से समाज विमुख होगा वहाँ साम्यवादी कैंसर अपना असर दिखाये बगैर नहीं रहेगा। आजादी के बाद साम्यवादियों के दुष्प्रचार तथा अकर्मण्य राजनीतिक नेतृत्व ने धर्मनिरपेक्षता का जो जहरीला विषाणु इस समाज में घोलने का षड्यन्त्र किया था, आज इसका दुष्प्रभाव आतंकवाद, अलगाववाद, नक्सलवाद, माफियावाद, जातिवाद, क्षेत्रवाद, भाषावाद तथा सामाजिक एवं चारित्रिक पतन के रूप में सर्वत्र दृष्टिगोचर हो रहा है। इसी एक शब्द के कारण हमने अपने शत्रु और मित्र को पहचानने की दृष्टि गँवा दी है। भारत को अगर भारत बने रहना है तो इसके सपूतों को अकर्मण्य राजनीतिक नेतृत्व के कारण अपने खिलाफ हो रहे साम्यवादी षड्यन्त्र को समझने की ताकत पैदा करनी होगी, अन्यथा तेजी के साथ फैल रहा नक्सली हिंसा का कैंसर राष्ट्र रूपी शरीर को अत्यन्त ही जर्जर एवं कमजोर कर देगा। इस देश का राष्ट्रीय समाज इसके प्रति सजग एवं सतर्क हो यही वर्तमान की सबसे बड़ी आवश्यकता है।